

पश्चिमी चंपारण के सुगंधति मर्चा चावल को मिला जीआई टैग

चर्चा में क्यों?

4 अप्रैल, 2023 को मीडिया से मिली जानकारी के अनुसार बिहार के पश्चिमी चंपारण ज़िले के सुगंधति मर्चा/ मेरचा धान को ज्योग्राफिकल इंडिकेशन (जीआई) टैग प्राप्त हुआ है।

प्रमुख बंदि

- गौरतलब है कि धान की इस स्वदेशी कस्मि का उत्पादन केवल बिहार के पश्चिमी चंपारण क्षेत्र में ही होती है। यह जानकारी जीआई जर्नल में प्रकाशित की गयी है।
- जीआई टैग के लिये आवेदन करने वाले मर्चा धान उत्पादक प्रगतशील समूह को अब केवल औपचारिक तौर पर जीआई टैग का प्रमाण-पत्र मलिन बाकी रह गया है। प्रमाण-पत्र अगस्त में मलिनगा।
- मर्चा/ मेरचा धान की इस विशेष कस्मि का आकार काली मर्च से मलिनता-जुलता होता है। यह धान बेहद सुगंधति और स्वादषिट होता है। इससे बनने वाला सुगंधति चूड़े की देश में ख्याती है।
- इसके उत्पादक क्षेत्र पश्चिमी चंपारण ज़िले के मैनाटांड, गौनाहा, नरकटयिगंज, रामनगर, चनपटयि ब्लाक है। इसकी औसत उपज 20-25 क्वटिल प्रतहिक्टेयर है। इस धान का पौधा लंबा होता है। इसकी उपज 145-150 दनि में तैयार हो जाती है। इस तरह पश्चिमी चंपारण के 18 ब्लाक में से छह ब्लाक में इसकी खेती की जाती है।
- उल्लेखनीय है कि इससे पहले बिहार के कृषि एवं उद्यानिकी के उत्पादों- जर्दालू आम, भागलपुर का कतरनी चावल, मुजफ्फरपुर की शाही लीची, मगध क्षेत्र का मगही पान और मथिलिा का मखाना को जीआई टैग मलि चुका है।
- इसके अलावा हस्तशलिप में मंजूषा कला, सुजनी कढ़ाई का काम, एपलकि खटवा वरक, सक्की घास के उत्पाद, भागलपुरी सलिक, मधुबनी पेंटगि और सलिव के खाजा को भी जीआई टैग हासलि हो चुका है।
- जीआई टैग मलिन से संबंधति उत्पाद की पहचान वैश्वकि फलक पर पहचानी जाती है। नरियात को बढावा मलिनता है। इससे कसिनो की आर्थकि स्थिति में सुधार होता है। उत्पाद का बेहतर मूल्य मलिनता है। जीआई टैग मलिन से उत्पाद को सुरक्षा और उसके संरक्षण की दशिा में सरकार कसिनो का सहयोग करती है तथा एगरो टूरजिम भी बढता है।



